राज
कॉमिक्स
मूल्य 6.00 संख्या 185
वू-डू
सुपर कमांडो
ध्रुव

वू-डू

सुपर कमांडो ध्रुव

कथा एवं चित्र – अनुपम सिन्हा

संपादक – मनीष चंद्र गुप्त

राजनगर की 'नेशनल लायब्रेरी' में अनगिनत किताबें हैं। यहां पर हर प्रकार की और हर विषय पर पुस्तकें उपलब्ध हैं–
इसके सदस्यों की संख्या भी एक लाख पार कर चुकी है–
और इस कारण, लायब्रेरी की हर अलमारी के आसपास भीड़ देखी जा सकती है।
लेकिन इस विशाल लायब्रेरी में एक कमरा ऐसा भी है, जिसमें मकड़ी, चूहे और दीमकों के अलावा शायद और कोई नहीं जाता–
क्योंकि इस कमरे में वे प्राचीन पुस्तकें रखी हैं जिनको शायद कोई कबाड़ी भी लेना नहीं चाहता। जाहिर है कि ऐसी किताबें कोई पढ़ना भी नहीं चाहता है।
या...या चाहता है?
मिल गई। हाहाहा हा। मिल गई। आज मेरी खोज पूरी हो गई।
मैडम! मैडम!! मुझे यह किताब इश्यू करवानी है। जल्दी से।
जी, इस किताब को जल्दी से इश्यू कराने की कोई जरूरत नहीं है। बल्कि सच पूछिए तो उस कमरे से एक किताब ले आकर आप हम पर एहसान कर रहे हैं।
एहसान!? मूर्ख औरत इस दुर्लभ किताब के महत्व को नहीं जानती।
लेकिन मैं इसका महत्व जानता हूं।
अब मुझको सफलता पाने से कोई नहीं रोक सकता। हाहाहाहा!

और उसी रात–
बिरजू, तैयार हो जा! एक शिकार आ रहा है।
क्या खाक तैयार हो जाऊं? यह तो शक्ल से ही कंगाल नजर आ रहा है।
अरे, बीस-पचीस रुपए तो होंगे ही इसके पास! बस, अपने अड्डे का इंतजाम हो जाएगा!
बाकी की लूट हम दूसरे राउंड में करेंगे!
कहो, हीरो! बिना टैक्स दिए कहां जा रहे हो?
टैक्स? कै... कैसा टैक्स?
कैसा टैक्स?
अबे, हमारे इलाके से निकल रहा है, और टैक्स भी नहीं देना चाहता है? ठहर!
हम टैक्स खुद ही निकलवा लेंगे।
ब... बचाओ! बचाओ!
चिल्लाता है?
तो यह ले! ...हैं!! यह क्या?
लेकिन बिरजू का घूंसा अपने शिकार के बदन तक नहीं पहुंच पाया–
कौन है ब... ध्रुव!! फ फ फ फ...!
कैसा लगा? अच्छा लगा न? अपने आप को घूंसा मारने में अलग ही आनंद आता है।
?
हमारे इलाके में आकर हम से ही दादागिरी करता है? तेरी तो...
दूसरा लुटेरा पास में पड़ी लकड़ी के टुकड़े को उठाकर ध्रुव की तरफ लपका।

उसने लट्ठे को ध्रुव की तरफ लहराया—
कड़ाक
और अगले पल ही लट्ठे के दो टुकड़े हो गए।
बिरजू को आश्चर्यचकित होने का भी मौका नहीं मिला—
ध्रुव ने अपनी मोटरसाइकल में लगे ट्रांसमीटर को ऑन किया—
हैलो, पुलिस कंट्रोल रूम?... ध्रुव हियर। 70 वीं साउथ रोड पर दो लुटेरे बेहोश पड़े हैं।... यस।... मैं रिपोर्ट सुबह आ कर लिखाऊंगा। ओवर एंड ऑल।
धन्यवाद, ध्रुवजी! बहुत-बहुत धन्यवाद!
किसलिए? आपकी जान बचाने के लिए?
उसकी कोई जरूरत नहीं। वैसे आप हैं कौन, और इतनी रात गए कहां से आ रहे थे?
मेरा नाम किशोर पांडे है! मैं अपने घर जा रहा था! वह रहा मेरा घर नं॰ 26। दर-असल मैं कुछ किताबें देने प्रोफेसर बलसाड़ के घर गया था।...
...मैं पी॰एच॰डी॰ कर रहा हूं न! प्रोफेसर बलसाड़ मेरे गाइड हैं।
पी॰ एच॰ डी॰ यानि शोध कार्य? लेकिन किस विषय पर?
प्राचीन अफ्रीकी कबीलों के तंत्र-मंत्र।
गुडनाइट, मि॰ ध्रुव!

अगले कुछ दिनों तक राजनगर में अपराध-लहर सामान्य रही। लेकिन यह शायद तूफान के पहले की सी शांति थी –
धड़ाक
धाड़
ट्रिंग!
क्योंकि सिर्फ दो सप्ताह बाद – राजनगर की 'शाहजहां आर्ट गैलरी' के बाहर एक वैन आ कर रुकी –
ART GALLERY
अब भी बता दो! कोई शक तो नहीं है न?
नहीं, बुद्ध मास्टर! वह चार करोड़ की पेंटिंग आज ही दोपहर को म्यूजियम में आई है।
तो तुम लोग अपनी-अपनी पोजीशनें ले लो।
मैं गार्डों से शुरूआत करता हूं।
दो सुईयां गार्डों की सी शक्ल वाले पुतलों में घुसीं –

और उसी क्षण – आर्ट गैलरी के पहरे पर तैनात गार्ड पेट में तेज दर्द के कारण बेहोश हो गए –
आऊ ऽऽऽ!
आ!!!! !!!!
गार्ड तो गए काम से, वर्गीस!
लेकिन गैलरी का मुख्य-द्वार तो काफी मजबूत है। हम इसको कैसे तोड़ेंगे?
वह सब तुम वूडू पर छोड़ो। तुम तो बस तमाशा देखते जाओ।
वैन के अंदर - वूडू मास्टर की उंगली के एक धक्के से आर्ट-गैलरी के मॉडल का मुख्य द्वार टूटा –
कड़क
ही ही ही ही ही।
और साथ ही - 'आर्ट-गैलरी' की इमारत का मुख्य दरवाजा भी धराशायी हो गया –
कड़ड़ड़ड़ड़
देखा, महादेव? आओ।
अब हमको पेंटिंग उठाकर जल्दी से जल्दी यहां से निकल जाना चाहिए।
इधर आओ! वह बेशकीमती पेंटिंग यहीं पर टंगी थी।
लेकिन यहां तो वह वाली पेंटिंग नहीं है!!
हां! उसपर तो किसी दढ़ियल का चेहरा बना था। पर यह तो गड़बड़ हो गई! अब उसे ढूंढते-ढूंढते ही सवेरा...
अरे नहीं। यह रही वह पेंटिंग। बेवकूफों ने कितनी लापरवाही से इसको लकड़ी के बक्से के ऊपर रख रखा है।
हां! जल्दी उठाओ इसे... य-यह क्या? मुझे ऐसा लगा जैसे इस पेंटिंग की आंखें हिल रही हैं!!

तभी-
तुमको ठीक लगा। वैसे भी तुम्हारे जैसे उल्लू अंधेरे में ज्यादा अच्छी तरह से देख सकते हैं।
धाड़
जब आर्ट-गैलरी के डायरेक्टर साहब ने मुझसे कहा था, कि चोर इस तस्वीर को चुराने के लिए कोई कसर नहीं छोड़ेंगे ...
... तो मुझे एकदम से विश्वास नहीं हुआ था।
लेकिन मुझे खुशी है कि मेरा प्लान कामयाब रहा। वैसे तुम लोगों की आन-काशी गलत नहीं थी।
वह बेशकीमती पेंटिंग अपने स्थान पर ही टंगी है।
सिर्फ अब उसके ऊपर मैंने कागज पर बनी एक दूसरी पेंटिंग चिपका दी है। बक्से के ऊपर रखी पेंटिंग उस असली पेंटिंग की नकल थी।
अरे! यह दोनों तो कुछ सुन ही नहीं रहे हैं। शायद बेहोश हो गए।
इनके साथी जरूर इनका बाहर इंतजार कर रहे होंगे। लेकिन इन लोगों ने दरवाजा कैसे तोड़ा?
और गार्डों ने इनको रोका क्यों नहीं?
और बाहर-
वे दोनों मूर्ख अब तक बाहर क्यों नहीं आए? और ये--ये कौन बाहर आ रहा है?
यह तो ध्रुव है, बूढ़े मास्टर!
सुपर कमांडो ध्रुव!!

तो भागो! इस वक्त मैं इस का मुकाबला नहीं कर सकता।
अरे! वे भाग रहे हैं। गलती मेरी ही है।
मुझे सामने वाले दरवाजे से बाहर नहीं आना चाहिए था।
ध्रुव का शरीर हवा में उछला।
लेकिन ड्राइवर ने वैन को तेजी से एक तरफ लहराया, और ध्रुव का निशाना चूक गया—
उसका पैर वैन की छत के बजाय खिड़की से आ लड़ा—
छनाक
ओह! तो यह ड्राइवर चालाकी दिखा रहा है।
लेकिन फिर भी मैं इनको भागने नहीं दूंगा।
चक्र की तरह घूमते हुए शीशे के तेज किनारे वाले टुकड़े वैन की तरफ उड़े।
और वैन की एक तरफ के दोनों टायरों में आ धंसे—
धड़ाक
फिस्स
वैन बेकाबू होकर बगल की दीवार से आ टकराई।
ओह! वैन के अंदर से दो आदमी भाग रहे हैं।
लेकिन वे भागकर जाएंगे कहां?
इधर से मैं उनको भागने नहीं दूंगा और...
सामने से पुलिस की गाड़ी भी आ रही है।
ध्रुव तेजी से उस गली की तरफ भागा, जिसमें उसने दोनों आदमियों को मुड़ते देखा था—
वे दोनों इसी गली में मुड़े थे।

और अंधेरे में वह लगभग किसी से टकरा गया—
कौन है?
किशोर तुम!?
तुम यहां पर क्या कर रहे हो?
मैं वो—हां। मुझे एक सज्जन ने अपने घर पर बुलाया था।
मैं वहीं पर जाने के लिए टैक्सी ढूंढ रहा हूं।
यहां से?
हां! मेरा घर यहां से ज्यादा दूर नहीं है न।
तुम्हारी कहानी अच्छी है।
क...कहानी कैसी? तुम कहना क्या चाहते हो?
ध्रुव! जल्दी इधर आओ।
वैन में एक आश्चर्यजनक चीज रखी है।
ये देखो।
हे भगवान! यह तो आर्ट-गैलरी का मॉडल है। और...
...और उन दो गार्डों के पुतले भी हैं, जो वहां पर बेहोश पड़े हैं।
और यह भी देखो! ठीक असली आर्ट-गैलरी के दरवाजे की तरह ही इस मॉडल का दरवाजा भी टूटा हुआ है।
और दोनों गार्डों के पुतलों के पेट में सुईयां घुसी हुई हैं।
इसका क्या मतलब हो सकता है?
इसका मतलब है...वू डू!...
?
...अफ्रीका के घने जंगलों से निकला सबसे प्राचीन और खतरनाक तंत्र।

वूडू ? यह क्या होता है ?
वूडू एक प्रकार का जादू होता है। इसमें अभिमंत्रित मिट्टी या लकड़ी से अपने शत्रु या वस्तु का मॉडल बनाया जाता है।
और फिर इस मॉडल के साथ जो कुछ भी किया जाएगा, ठीक वैसा ही उस असली वस्तु या व्यक्ति के साथ भी होगा।
यह तो कुछ कुछ वैसा ही है
जैसे पुरानी कहानियों में राक्षस की जान तोते में होती थी।
लेकिन यह सब आपको कैसे पता है ?
मैं इसी विषय पर शोध कार्य कर रहा हूं।
सर, हमने वैन के ड्राइवर को पकड़ लिया है। पर दूसरे आदमी का कहीं कोई पता नहीं है।
चिंता की कोई बात नहीं है। उस आदमी को भी हम ढूंढ ही निकालेंगे। क्यों किशोर ?
क्यों नहीं ? क्यों नहीं ? अच्छा गुड नाइट।
मुझे अभी टैक्सी भी ढूंढनी है।
हां, एक बात और।
इन दोनों पुतलों के पेट से सुईयां निकाल देना। दोनों गार्ड तुरंत होश में आ जाएंगे।
यह तुम्हारा किशोर कुछ जरूरत से ज्यादा ही जानता है, ध्रुव!
और जरूरत से ज्यादा बोलता भी है।

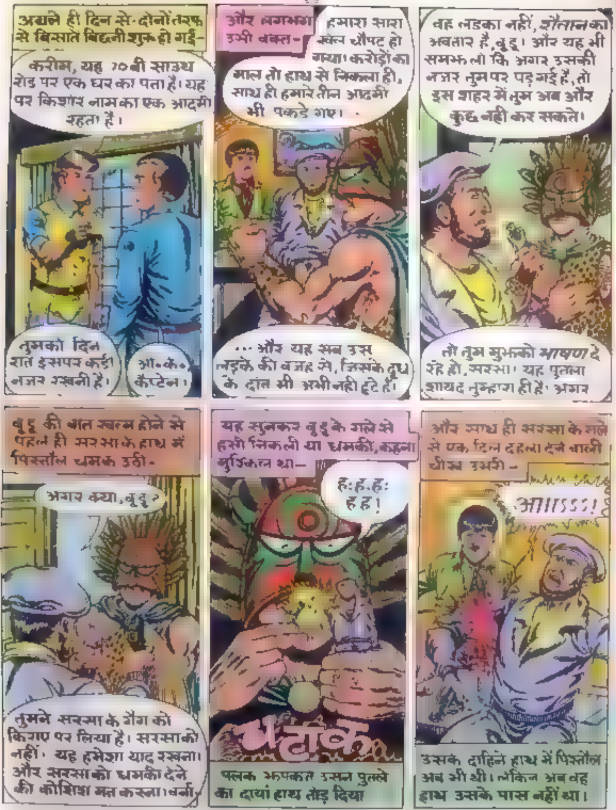
अगले ही दिन से-दोनों तरफ से बिसातें बिछनी शुरू हो गई-
करीम, यह 70वीं साउथ रोड पर एक घर का पता है। यह पर किशोर नाम का एक आदमी रहता है।
तुमको दिन रात इसपर कड़ी नजर रखनी है।
ओ॰के॰ कैप्टेन।
और लगभग उसी वक्त-
हमारा सारा खेल चौपट हो गया। करोड़ों का माल तो हाथ से निकला ही, साथ ही हमारे तीन आदमी भी पकड़े गए।
...और यह सब उस लड़के की वजह से, जिसके दूध के दांत भी अभी नहीं टूटे हैं।
वह लड़का नहीं, शैतान का अवतार है, बूडू। और यह भी समझ लो कि अगर उसकी नजर तुम पर पड़ गई है, तो इस शहर में तुम अब और कुछ नहीं कर सकते।
तो तुम मुझको भाषण दे रहे हो, सरसा। यह पुतला शायद तुम्हारा ही है। अगर
बूडू की बात खत्म होने से पहले ही सरसा के हाथ में पिस्तौल चमक उठी-
अगर क्या, बूडू?
तुमने सरसा के गैंग को किराए पर लिया है। सरसा को नहीं। यह हमेशा याद रखना। और सरसा को धमकी देने की कोशिश मत करना। वर्ना
यह सुनकर बूडू के गले से हंसी निकली या धमकी, कहना मुश्किल था-
हः हः हः हः हः!
चटाक
पलक झपकते उसने पुतले का दायां हाथ तोड़ दिया
और साथ ही सरसा के गले से एक दिल दहला देने वाली चीख उभरी-
आ।।ऽऽऽ!
उसके दाहिने हाथ में पिस्तौल अब भी थी। लेकिन अब वह हाथ उसके पास नहीं था।

बूढ़ू से सरसा का तड़पना नहीं देखा गया। उसने पुतले की गर्दन मरोड़ दी–
और सरसा का तड़पना शांत हो गया।
हां, तो अब हम अपने पुराने विषय पर आते हैं, बांके। सरसा मरते-मरते यह तो बता ही गया है कि ध्रुव के रहते हम यहां पर कुछ नहीं कर सकते।
इसीलिए अब हमको ध्रुव को रास्ते से हटाने की तरकीब सोचनी होगी।
आप उसका पुतला बनाकर उसको पलभर में जान से मार सकते हैं बूढ़ू।
मैंने भी सोचा था बांके।
लेकिन ऐसा करने से पूरे शहर की पुलिस फोर्स हमारे पीछे लग जाएगी। और मैं पूरी पुलिस फोर्स के पुतले तो नहीं बना सकता न?
आईडिया, बूढ़ू!! ध्रुव को अपनी मां से बहुत प्यार है। अगर आप इससे कुछ...।
समझ गया, बांके, समझ गया। शाबास, शाबास!! ध्रुव का इंतजाम अब मैं करता हूं।
... और तुम अब जाकर हमारे गैंग के लिए नए आदमियों का इंतजाम करो।
दूसरी तरफ ध्रुव की छान बीन जारी थी–
वे तीनों आदमी सरसा गैंग के हैं, ध्रुव।
वही सरसा, जिसकी लाश अभी अभी मिली है?

इन पकड़े गए गुंडों के अनुसार, इनके गैंग को किसी दूसरे व्यक्ति ने किराए पर लिया था। वह जंगली ओझा जैसा मुखौटा पहनता है, और अपने आपको वू डू कहता है।
...वह वास्तव में कौन है यह तीनों में से कोई नहीं जानता।
शायद मैं जानता हूं। लेकिन जहां तक मैं जानता हूं, सरसा के गैंग में चार गुंडे थे।
हां। उस गैंग का एक आदमी अब भी बचा हुआ है। उसका नाम बांके है।
अच्छा, सर। अब मैं चलूंगा।
मुझे अभी काफी सबूत इकट्ठे करने है।
प्रोफेसर बलसाड का घर ढूंढने में ध्रुव को ज्यादा दिक्कत नहीं हुई –
और न ही प्रोफेसर साहब से कुछ जानकारी उगलवाने में कोई परेशानी हुई –
तो तुम किशोर के बारे में पूछने आए हो! क्या किया है उसने?
अभी तक तो मुझे भी यह नहीं पता कि उसने क्या किया है।
वह कुछ कर भी नहीं सकता। बहुत सीधा लड़का है। लेकिन वह महत्वाकांक्षी भी बहुत है। इसीलिए वह एक ऐसे विषय पर शोध कार्य कर रहा है, जिसके बारे में कभी किसी ने सोचा तक नहीं है।
दूसरी तरफ, बांके अपने गैंग का बॉस बन जाने की खुशी में झूम रहा था –
तुम लोगों को सिर्फ माल समेटने और रफू-चक्कर होने का काम करना पड़ेगा

बाकी सब काम में और व ह...
ए लौंडिया! रास्ते के बीच में क्यों चल रही है?
मरने का इतना शौक है, तो जाकर रेल की पटरी के बीच में चल।
वह लड़की शायद ऐसी जुबान सुनने की आदी नहीं थी–
वह तेजी से घूमी–
और बांके की टोपी हवा में उछल गई–
हैं! इसकी ये हिम्मत।
दादागिरी करती है?
चटनी बना दो इसकी।
तीन बलिष्ठ और पेशेवर गुंडे, एक अकेली लड़की की चटनी बनाने के लिए लपके–
और पलक झपकते उस लड़की के हाथ से तीन चाकू हवा में उछले–
और अपने अपने निशानों पर जा धंसे–

अब तीनों बलिष्ठ और पेशेवर गुंडे सिवाय मार खाने के और कुछ नहीं कर सकते थे
बांके का खुला मुंह खुला ही रह गया –
अरे, वाह। कौन हो तुम, सुंदरी?
नाम तो मेरे कई हैं। लेकिन मेरे दोस्त मुझे प्यार से शेटा रामपुरी कहते हैं।
वा वाह। कितना खतरनाक नाम है। हमारे लिए काम करोगी, मिस रामपुरी?
अगर दाम मिलेगा तो जरूर करूंगी। लेकिन शेटा को धोखा देने की कभी सपने में भी मत सोचना, बांके।
तु- तुम मेरा नाम कैसे जानती हो?
मैं क्या नहीं जानती बांके?
हो हो हो। हा। चलो।
ठीक इसी वक्त –
समझ गई न, रेणु? तुमको वू डु द्वारा किसी भी वारदात की खबर मुझ तक तुरंत पहुंचानी होगी।
बगैर किसी चूक।
यह काम तुम कैसे करोगी, यह सोचना मैं तुम पर छोड़ता हूं।
मैं तुमको सिर्फ इतना ही बता सकता हूं कि वू डु के पास सिर्फ अब एक आदमी बचा हुआ है। बांके।
इसपर नजर रखने का मतलब है, वू डु पर नजर रखना। गुडलक।
थैंक्यू, सर।

और फिर – अगली रात को जब काले आसमान से चांद भी अपनी रोशनी नहीं बिखर रहा था ..
ATIONAL BANK
...एक और वैन नेशनल बैंक के सामने आकर रुकी।
उसमें से कुछ लोग तेजी से उतरकर बैंक की तरफ बढ़े–
कमाल है! यह बैंक के चौकीदार कहां चले गए?
तो क्या वे स्वागत में खड़े रहते? कहीं जाकर चाय पी रहे होंगे, स्साले!
वैन के अंदर – बैंक के
मॉडल के सामने बैठे बुड्ढे की उंगली हिली –
और बैंक के दरवाजे अपने आप टूट गए–
?
आओ!
असली माल तो स्ट्रांग रूम में रखा है।
स्ट्रांग रूम का बारह इंच मोटा स्टील का दरवाजा भी –

बुढ़ू की जादुई शक्ति के आगे टिक न सका -
जल्दी करो। हमको सारे नोट ले कर जल्दी से जल्दी फूट लेना है।
जल्दी क्या है ?
अब आए हो तो खातिरदारी करा कर जाना। वैसे भी अभी बाहर बहुत अंधेरा है।
ध्रु ध्रु ध्रुव !!!
यह स्ट्रांग रूम के अंदर कैसे...
आ आ!!!!!!
सोचो। और सोचो।
जेल के अंदर बैठ कर सालों तक सोचना।
अरे, बांके, झूठे! तूने यह नहीं बताया था कि हमें ध्रुव से भिड़ना पड़ेगा। हाय !!
माना कि तुमको मेरी शक्ल पसंद नहीं है।
लेकिन अब आ ही गए हो तो हाथ तो मिलाते जाओ, मेरे दोस्त!
हाय!
मर गया रे, मेरी अम्मा!
अब बताओ, बांके। तुम्हारे लिए मैं क्या
लेकिन तभी एक उड़ता चाकू दोनों के बीच से गुजर गया।

कौन? कौन हो तुम?
बांके की दोस्त और तुम्हारी दुश्मन।
ध्रुव तेजी से नीचे झुका। पर फिर भी तेज चाकू उसके बालों को छूता हुआ, पीछे, लकड़ी के बक्सों में जा धंसा–
खचाक
आह! यह लड़की वाकई खतरनाक है।
अगर यह चाकू इंच भर भी नीचे होता तो मेरा बोलो राम हो गया होता।
और मेरे साथ परेशानी यह है कि मैं लड़कियों पर हाथ नहीं उठा सकता।
ध्रुव ने लकड़ी के एक बक्से को उठाकर तेजी से शेटा की तरफ फेंका।
लेकिन शेटा का हाथ पहले ही एक बार फिर घूम चुका था
बहुत अच्छा। ठीक वैसा ही जैसा मैं चाहता था।
कड़ाश
चाकू अपने निशाने पर जा लगा। बक्से का ताला अलग हो गया।
और उसमें से हजारों की संख्या में एक रुपए के सिक्के शेटा पर आ गिरे–
खनन
ध्रुव बगैर कोई शब्द बोले बाहर की तरफ भागा। और उसने स्टोर रूम का दरवाजा बाहर से बंद कर दिया–
चलो! इनका तो इंतजाम हो...
इतनी उतावली ठीक नहीं है, ध्रुव बेटे!

ओह! वूडू मास्टर! तो आखिर तुम मेरे सामने आ ही गए।
आना ही पड़ा। वर्ना अगली बार मुझको फिर अपने गैंग में नए आदमी भर्ती करने पड़ते।
और अब मैं इस पुतले के कंधे में सलाई घुसाता हूं।
यकीन करो। इस वक्त तुम्हारी मां के कंधे में जबर्दस्त दर्द हो रहा होगा।
तो मैं इस पुतले का हाथ तोड़ दूंगा। और यह भी जान लो कि सलाई निकाल लेने से दर्द तो खत्म हो जाएगा, पर हाथ टूटने के बाद फिर जुड़ नहीं पाएगा।
लेकिन तुम आगे मत बढ़ना। इस पुतले को पहचानते हो न? यह तुम्हारी मां का पुतला है।
और अब, अगर तुमने मेरे अ. कर्मचारियों को रोकने की कोशिश की ...
अब जाओ। और मेरे आदमियों के साथ पैसों को वैन में रखवाओ। वर्ना ...
आर्ट गैलरी के गार्डों का हाल देख चुकने के बाद ध्रुव के पास अविश्वास का कोई कारण नहीं था–
वह वूडू की बात मानने को मजबूर था।
इस वक्त तो मैं तुमको नहीं रोक सकता, वूडू।
लेकिन याद रखना। मैं जानता हूं कि तुम कौन हो।
सच में? हाहाहा। लेकिन मेरा सुझाव है कि ऐसी कोई भी हरकत करने से पहले तुम अपनी मां को देख आओ।
हा हा हा हा हा।
कुछ ही पलों में वैन धूल और धुएं के गुबार में खो गई–
और साथ ही साथ ध्रुव के मुंह पर भी कालिख मल गई। वूडू ने आज उसको भी अपने अपराधों में शरीक कर लिया था।

और ध्रुव को किसी भी तरह अपने ऊपर लगा यह कलंक मिटाना था–
लेकिन इस वक्त उसके दिमाग में यह बात नहीं थी –
इस वक्त उसके दिमाग में सिर्फ एक सवाल घूम रहा था कि–
मम्मी की तबियत कैसी है, श्वेता ?
क्या मतलब? तबियत ठीक ही होगी।
वैसे शाम से मम्मी अपने कमरे में ही हैं।
लेकिन सुनो तो, भइया! आखिर बात क्या..
लेकिन इतनी देर में ध्रुव सीढ़ियां चढ़ चुका था
पलक झपकते वह रजनी के कमरे में था–
मम्मी, तुम्हारी तबियत अरे, ठीक है!!
क्यों? मुझे क्या हुआ है, बेटे?
श्वेता ने फिर कोई मजाक किया है क्या?
तुम्हारे -- तुम्हारे कंधे में बहुत तेज दर्द है न?
नहीं तो!
बचपन से आज तक तो कभी नहीं हुआ।
ओ माई गॉड।
ध्रुव, सुनो तो! अरे! इसे क्या हो गया?
लगता है भइया को ठंड लग गई है, मम्मी। दिमाग में कफ जम गया है।

ध्रुव का दिमाग वाकई घूम रहा था–
कमाल है। मम्मी पर वू डू के जादू का कोई असर क्यों नहीं हुआ?
क्या वू डू ढोंगी है?
लेकिन फिर आर्ट गैलरी के गार्डों को क्या हुआ था?
ध्रुव का अगला पड़ाव कमांडो हेडक्वार्टर था–
हैलो, करीम। क्या रिपोर्ट है? क्या? तुमको कोई गलतफहमी तो नहीं हुई?
अच्छा। ठीक है।
तुम उसपर नजर रखना जारी रखो। ओवर एंड आल।
यह मामला तो और उलझ गया।
खैर। देखूं कि रेणु की क्या रिपोर्ट है।
हैलो, रेणु?
क्या रिपोर्ट है? जल्दी बोलो।
ध्रुव। मैं इन लोगों पर पूरी नजर रखे हुए हूं।
इस वक्त पूरा गिरोह अड्डे पर है। वू डू सहित। तुम यहां का पता नोट करो।
मैं नोट करता हूं। लेकिन इससे पहले तुम करीम के लिए एक मैसेज नोट करो।
आज की रात शायद ध्रुव के नसीब में आराम नहीं लिखा था–
क्योंकि ध्रुव आज का काम आज ही निपटाने में यकीन रखता था।
दूसरी तरफ वू डू खुशी से पागल हो रहा था–
हाहाहा! नोट ही नोट! इतने सारे नोट! और यह सब मैंने इस ध्रुव से उठवाए हैं।
और जब तक उसकी मम्मी की जान मेरे पास कैद है, तब तक वह हमारे खिलाफ कुछ नहीं कर सकता।

ऐसा है तो मुझे तुम्हारे विश्वास को तोड़ते हुए बड़ा दुख हो रहा है।
तुम!? तुम -- तुम तुम यहां कैसे आ गए?
इसके लिए तुम अपने दिमाग को कष्ट मत दो। तुम तो सिर्फ बैंक का पैसा वापस स्ट्रांग रूम से पहुंचाने की तकलीफ करो।
हा हा हा! लगता है अब तुमको अपनी मां से प्यार नहीं रहा।
जानते हो कि अगर मैं ये सुई तुम्हारी मां के पुतले के दिल में भोंक दूं तो क्या होगा?
नहीं जानता।
ज़रा कर के तो दिखाओ।
ध्रुव तुरंत समझ गया कि अब इसकी धमकी ध्रुव पर बेअसर है।
पकड़ लो इसे! जाने मत देना
इससे पता करो कि इसको हमारे अड्डे का पता कैसे लगा?
हर तरफ से गुंडे ध्रुव की तरफ लपके –
लेकिन उनकी उंगली भी ध्रुव के बदन से नहीं छू पाई–
ढिशुं ठक
वैसे भी ये सभी गुंडे ध्रुव से अभी अभी पिट चुके थे।
धाड़ तड़

सिर्फ एक को छोड़कर -
ठक
और फिर - एक के बाद एक चाकू ध्रुव के अगल-बगल से दीवार में धसने लगे -
खट
खट
खट
खट
खट
और चाकुओं ने ध्रुव को दीवार के साथ ठोक दिया।
शाबास, शेटा, शाबास।
लेकिन इस समय के लिए मैंने इसका पुतला पहले से ही बनाकर रखा था।
अब मैं इसको दिखाता
एक सलाई पुतले में धंसी।
और साथ ही साथ ध्रुव के गले से एक चीख उभरी -
आ!!!
ऊऽऽ!
और ध्रुव -
बेहोश हो गया!? च च च! बड़ा ही कमज़ोर निकला।
मुझे बेहोश होने का नाटक करना ही पड़ेगा। वर्ना यह मेरे पुतले में दो तीन सलाइयां और घुसेड़ देगा।
अब, जब तक यह मेरे वश में है, तब तक पुलिस भी हमारा कुछ नहीं बिगाड़ सकती।
शेटा, आज और अभी से यह पंछी तुम्हारी निगरानी में रहेगा।

अब मैं चलता हूं। मुझे अभी और भी बहुत से काम हैं
बाके, तुम मेरे साथ बाहर आओ। मुझे तुमसे कुछ जरूरी बात कहनी है।
और बाहर –
बुड्डू बाहर आ रहा है। यही मौका है। तुम पिछले दरवाजे से अंदर जाकर अपना काम शुरू करो। –
ओ.के.
और मैं और रघु बुड्डू को वापस अंदर भेजने का इंतजाम करते हैं।
एक आकृति तेजी से मकान की तरफ बढ़ी, और अंधेरे में गुम हो गई –
दूसरी तरफ – बुड्डू परेशान था –
यह वैन स्टार्ट क्यों नहीं हो रही है?
शायद किसी ने इसका स्पार्क प्लग निकाल लिया है।
तुम कौन – लेकिन ठहरो। मैं तुम दोनों को पहचानता हूं। तुम दोनों तो कमांडो फार्म के कैडेट हो।
तुम्हारी जनरल नॉलेज अच्छी है, बुड्डू।
हा हा। लेकिन तुम्हारा चुप कैप्टेन तो इस वक्त मेरे गुरु तंत्र की कैद में है। मेरे एक इशारे पर उसकी जान जा सकती है।
वैसे सौदा सस्ता है, बच्चे।
तुम्हारे कैप्टन के जान के बदले में स्पार्क प्लग। लाओ

लेकिन वूडू को कमांडो फोर्स के कैडेटों की फुर्ती का एहसास नहीं था
चट
करीम, कैच!
वेल टेकेन, करीम!
अब, वूडू मास्टर, हमारे कैप्टन की जान भी हमारे पास है... और तुम्हारी भी।
वाह, रेणु! लेकिन घूंसा जरा हल्का था। एक जरा जोर से लग जाए तो...
तो ये लो, कमांडो करीम!
अपनी कमांडो फोर्स के कैडेटों की सुरक्षा रखना मेरा फर्ज है!
लेकिन तभी एक धमाके ने करीम और रेणु के प्लान पर पानी फेर दिया।
धांय
दरवाजे पर बांके धुआं उगलती पिस्तौल लिए खड़ा मुस्कुरा रहा था –
बच्चे झगड़ा करते अच्छे नहीं लगते।
हम पिस्तौलों से नहीं डरते बांके। तुम यह पुतला हमसे किसी भी कीमत पर वापस नहीं ले सकते हो।
अब अच्छे बच्चों की तरह वूडू भगवान को उनका पुतला वापस दे दो। कम ऑन। हरी अप।
मैं जानता हूं बहादुर कैडेटो! लेकिन गोली मैं तुमको नहीं, इस पुतले को मारूंगा।

और फिर तुम्हारे कैप्टेन का क्या हाल होगा, यह तुम सोच भी नहीं सकते।
यह तो पुतला।
होनहार बच्चे हैं। बड़ी जल्दी समझ गए। अब अंदर तो आओ।
अंदर शीला सम्पूर्ण बदहवास थी–
बहुत अच्छा हुआ कि आप आ गए
यह ठीक कह रहा है, कर्गम। हम ध्रुव की जान से खिलवाड़ नहीं कर सकते।
ऐसे ही बाहर से चले जाओगे क्या? आओ–आओ
यह लड़का तो होश में आ गया।
इसके गले में दर्द भी नहीं है।
वह इसलिए, क्योंकि अभी बाहर हुए झगड़े में सलाई पुतले के गले से बाहर निकल गई है।
इसको अपनी जगह घुसेड़ते ही इसके होश फिर ठिकाने आ जाएंगे।
ऐसे!
बू डू ने बेदर्दी से सलाई पुतले के गले में वापस घुसेड़ दी–
तुम... तुम हँस रहे हो?
तेरी ये हिम्मत
ले, ले और ले
और ध्रुव के गले से चीख के बजाय हँसी का फव्वारा छूट गया।
बू डू पागलों की तरह पुतले में सलाइयां खोंसता गया।

य -यह क्या हो गया? मेरा वूडू जादू बेकार क्यों हो गया?
तुम्हारा जादू बेकार नहीं हुआ है, नकली वूडू! ..
.. बल्कि तुम्हारे जादू को मेरे असली वूडू ने अपने जादू से काट दिया है।
और अब तुम असली वूडू से मुकाबला करने को तैयार हो जाओ। तुमने अपने जादू को गलत कार्यों के लिए इस्तेमाल किया।
और तुमको इसकी सजा मिलनी ही चाहिए।
अरे ये कौन हैं? इसे पकड़ो।
ह! तुम्हारे सभी आदमी बेहोश पड़े हैं, नकली वूडू।
और जितने होश में हैं -
उनके लिए कमाण्डो फोर्स बहुत है।
और अब तुम अपनी ही दवा का स्वाद चखने को तैयार हो जाओ।
इतनी जल्दी नहीं, दोस्त!
अगर तुम्हारे पास मेरे जादू का काट है, तो मेरे पास भी तुम्हारे जादू का तोड़ है, नकलची।
वूडू अलमारी में रखे एक जार की तरफ लपका-
लेकिन तभी जार के टुकड़े टुकड़े हो गए-
यह क्या!?
छ नाक
रीता! तुम... गद्दार! तू तू दुश्मनों से मिल गई, धोखेबाज!
शाबास रीता। अगर यह उस जादुई पानी को पी लेता, तो मेरा वूडू जादू इस पर असर नहीं करता।
और अब मैं वूडू मास्टर को वूडू का असर दिखाता हूँ।

यह गई सुई नंबर एक —
पेट में!
हाय! मर गया!
क्यों, वू डू मास्टर? बहुत तेज दर्द है न? अब सुई नंबर दो की बारी है।
ये!
दईया लेकिन ये! यह असंभव है।
अब तुम हाय जानते हो नहीं कि मैं कौन हूं।
...तो तुम मेरा पुतला कैसे बना सकते हो? हाय
बस करो! नहीं तो मैं मर जाऊंगा!
अच्छा चलो! तुम कहते हो तो तुमको और परेशान नहीं करते। लेकिन तुमने यह कैसे समझा कि हम तुमको नहीं जानते?
देखो, इस पुतले की शक्ल तुमसे मिलती है या नहीं, प्रो० बलसाड!
यह तो मेरा ही पुतला है। पर तुम कौन हो? और तुमको वू डू जादू किसने सिखाया?
इसको वू डू तुमने ही सिखाया है, बलसाड। क्योंकि ...
तुम ही इसके गाइड हो।
किशोर तुम!!

हां, प्रो० बलसाड़! अगर मैं चाहता तो तुमको आधे घंटे पहले ही पकड़ सकता था। पर मैं तुमको किशोर से ही पकड़वाना चाहता था।
ताकि तुम खुद समझ सको कि वू डू का दर्द क्या होता है।
तो तुम यह सब पहले ही से जानते थे। तुम सबने मुझे बेवकूफ बनाया। उल्लू बनाया।
आइए, इंस्पे. साहब!
रेणु का मैसेज मिलते ही मैं चल पड़ा। यहां पर सब ठीक तो है न ?
फर्स्ट क्लास। लेकिन आप इसको जल्दी से जल्दी यहां से ले जाइए, वर्ना यह अपने बचे बाल भी नोच डालेगा।
और फिर-
शाबास, किशोर! तुमने अपना पार्ट बहुत खूबी से अदा किया!
यह सब तो करीम की ट्रेनिंग का कमाल है।
वास्तव में पहले मेरा शक तुमपर था, किशोर!
लेकिन करीम से यह जान कर, कि बैंक डकैती के समय तुम घर पर ही थे, मुझे अपना विचार बदलना पड़ा।
मेरी जानकारी में सिर्फ दो ही लोग वू डू तंत्र के बारे में जानते थे! और वह दूसरा व्यक्ति प्रोफेसर बलसाड़ था! ...
...इसीलिए जब रेणु से मुझको इनके अड्डे का पता लग गया, तो मैंने तुमको करीम द्वारा तुरंत यहां बुलवा भेजा।
अब मुझे सारी बातें समझ में आ रही हैं। शुरू में प्रोफेसर बलसाड़ ने मुझको लालच दिया था कि अगर मैं उनके लिए कहीं से वू डू की किताब खोज लाऊं तो...
... वे मुझको घर बैठे पी-एच-डी-करवा देंगे।

लेकिन चूंकि मेरे शोध कार्य का भी विषय यही था, इसीलिए मैंने वह किताब बलसाड़ को देने से पहले खुद भी ध्यान से पढ़ी।
इससे मुझको भी वूडू जादू के प्रयोग का तरीका भी आ गया था।
और उसी से मुझे वह मंत्रित जल बनाने का तरीका भी पता चल गया, जिसको मैंने तुम को पिला कर वूडू जादू से मुक्त कर दिया।
लेकिन आखिरी वक्त पर रीटा अगर चाकू से वार न रोक देती, तो शायद मैं बलसाड़ को सबक न सिखा पाता।
लेकिन आखिरी समय पर यह रीटा रामपुरी हमारी तरफ कैसे हो गई, ध्रुव?
हाहाहा। बता दूं, रीटा?
बता दो! अब अपने दोस्तों से क्या पर्दा रखा जाए।
तो सब सुनो। दरअसल यह रीटा रामपुरी...
...कमांडो फोर्स का कैडेट पीटर है।
क्या!!
हाहा हाहा।
मैंने सोचा कि क्यों न दाढ़ी-मूंछें निकलने से पहले इसकी शक्ल का फायदा उठा लिया जाए।
ओह! पतली आवाज बना-बनाकर मेरा तो गला ही बैठ गया।
कुछ भी कहो, पीटर, लेकिन लड़की बनकर तुम मुझसे भी ज्यादा खूबसूरत लग रहे थे।
ओ, शट अप, रेणु!

आई एम सॉरी, पीटर! लेकिन सिर्फ यही एक रूप ऐसा था, जिसमें तुमको कोई भी पहचान नहीं सकता था।
ये गुंडे यह सोच भी नहीं सकते थे कि कमांडो फोर्स के कठोर कैडेट कोमल लड़की भी बन सकते हैं।
यह सब तो मैं पहले से ही अच्छी तरह समझ गया था, कैप्टेन!
वैसे भी तुम्हारा हर हुक्म मानना मेरा कर्तव्य है।
लेकिन अगर पीटर वूडू के गैंग में शामिल ही था, तो मुझे इस गैंग के पीछे लगाने की क्या जरूरत थी, ध्रुव?
बहुत जरूरी था, रेणु!...
क्योंकि पीटर को हर वक्त इन गुंडों के ही बीच में रहना था। और ऐसे में मेरे पास संदेश भेजना इसके लिए खतरनाक भी हो सकता था।
यू आर राइट, कैप्टेन!
एक बात मुझको अभी भी परेशान कर रही है। वह यह कि मम्मी पर वूडू के जादू का असर क्यों नहीं हुआ?
यह तो मैं भी नहीं जानता।
जहां तक मैं समझता हूं, वह पुतला बलसाड़ ने तुम्हारी मां के नाम से बनाया था, ताकि वह तुमको अपने वश में रख सके।...
...अब या तो बलसाड़ से 'वूडू का पुतला' ठीक प्रकार से बन नहीं पाया। या...

क्या?
या फिर वह तुम्हारी मां नहीं ...मेरा मतलब- रिश्ते में कहीं पर कोई चूक है।
अच्छा!
तो फिर यही बात होगी।
मेरी मां को गुजरे तो काफी वक्त हो गया है। मुझे इस वक्त पालने वाली मां, मुझे जन्म देने वाली मां नहीं है।
और तंत्र मंत्र में 'मां' का मतलब जन्म देने वाली मां से ही होता है।
पर अब इस किताब का मैं क्या करूं?
तुम पी॰एच॰डी॰ किसी और विषय में कर लेना।...
...इस समय तो मुझे इस किताब का एक ही इस्तेमाल ध्यान में आ रहा है।...
सर्दी में हाथ तापने का।
समाप्त